3 भगवतीचरण वर्मा

➥ व्यक्तित्व

भगवतीचरण वर्मा का जन्म 1903 ई0 में उन्नाव जिले के शफीपुर में हुआ था। आपने प्रयाग विश्वविद्यालय से बी0ए0, एल-एल0बी0 तक की शिक्षा प्राप्त की। वर्माजी ने प्राय: सभी विधाओं में साहित्य-सर्जना की है। हिन्दी साहित्य में आपका पदार्पण छायावाद की नवीन धारा के कवि के रूप में हुआ था तथा प्रगतिशील कवियों में आपने अपना विशिष्ट स्थान बनाया। वर्माजी एक सफल उपन्यासकार तो थे ही, उच्चकोटि के व्यंग्यात्मक कहानीकार के रूप में भी आप प्रतिष्ठित हुए। फिल्म तथा आकाशवाणी कार्यक्रमों में भी आपने नाम कमाया। 1981 ई0 में आपका देहावसान लखनऊ में हो गया।

➥ कृतित्व

वर्माजी के कहानी संग्रह हैं—**इन्स्टालमेण्ट, दो बाँके** तथा **राख और चिनगारी। 'मोर्चाबन्दी'** नाम से इनकी व्यंग्य कथाओं का संग्रह प्रकाशित हुआ है। आपके उपन्यास हैं—**पतन, चित्रलेखा, तीन वर्ष, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, सामर्थ्य और सीमा-रेखा, सीधी-सच्ची बातें, सबहिं नचावत राम गुसाईं, प्रश्न और मारीचिका**। आपने कविताएँ, रेडियो-रूपक तथा नाटक भी लिखे हैं।

➥ कथा-शिल्प एवं भाषा-शैली

वर्माजी की गणना अपने युग के शीर्षस्थ कहानीकारों में की जाती है। आपकी कहानियों में कला की सजीवता पाठक को मुग्ध कर देती है। सरलता, स्पष्टता, सहजता एवं व्यंग्यात्मक अभिव्यंजना आपकी कहानियों की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

आपकी कहानियों में अधिकतर सामाजिक परिवेशों तथा पारिवारिक प्रसंगों को कथानक के रूप में लिया गया है। कथानक लघु किन्तु कलापूर्ण एवं सव्यंग्य हैं। नगण्य एवं सामान्य घटनाओं का मार्मिक तथा चुटीला प्रस्तुतीकरण आपकी विशेषता है। शीर्षक आकर्षक एवं कुतूहलवर्धक होते हैं। वर्माजी ने मुख्यत: चरित्रप्रधान, समस्याप्रधान अथवा विचारप्रधान कहानियाँ लिखी हैं। कहानियों के पात्र समाज के विभिन्न वर्गों से चुने गये हैं। वर्गीय पात्रों के चरित्र-चित्रण में आपने मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर उन्हें सजीव बना दिया है। पात्रों के मनोगत भावों को स्पष्ट करने तथा उनकी मनोग्रन्थियों को खोलने में आपका कौशल देखते ही बनता है।

आपकी कहानियों में कथोपकथनों की योजना मनोरंजक ढंग से की गयी है। कथोपकथन संक्षिप्त एवं सार्थक हैं तथा पात्रों के मनोगत भावों को व्यक्त करने में समर्थ हैं। लेखक ने नाटकीयता का पुट देकर संवादों को अत्यन्त सजीव तथा वातावरणपरक बना दिया है।

'दो बाँके', 'मुगलों ने सल्तनत बख्श दी', 'प्रायश्चित', 'काश मैं कह सकता', 'विक्टोरिया क्रास', 'कायरता', 'वसीयत' आदि आपकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।

आपकी भाषा-शैली सरल, सहज एवं व्यावहारिक है। शैली में व्यंग्य के साथ-साथ प्रवाह है तथा वह पात्रों के अनुकूल एवं परिस्थिति के अनुसार बदलती है। आपकी अधिकतर कहानियों में शिष्ट हास्य एवं परिमार्जित व्यंग्य पाठक को प्रभावित करते रहते हैं।

परिस्थिति एवं प्रसंग के उपयुक्त, रोचक एवं प्रभावशाली वातावरण चित्रित करने में वर्मा जी सिद्धहस्त थे। आपकी कहानियाँ जीवन की विकृतियों और विसंगतियों को पाठक के समक्ष न केवल उद्घाटित करती हैं, अपितु यथार्थ अनुभव के प्रति पाठक को संवेदनशील भी बनाती हैं।

●●●

प्रायश्चित

अगर कबरी बिल्ली घर भर में किसी से प्रेम करती थी, तो रामू की बहू से और अगर रामू की बहू घर भर में किसी से घृणा करती थी, तो कबरी बिल्ली से। रामू की बहू, दो महीने हुए मायके से प्रथम बार ससुराल आयी थी, पति की प्यारी और सास की दुलारी, चौदह वर्ष की बालिका। भण्डार-घर की चाभी उसकी करधनी में लटकने लगी, नौकरों पर उसका हुक्म चलने लगा, और रामू की बहू घर में सबकुछ। सास जी ने माला ली और पूजा-पाठ में मन लगाया।

लेकिन ठहरी चौदह वर्ष की बालिका, कभी भण्डार-घर खुला है, तो कभी भण्डार-घर में बैठे-बैठे सो गयी। कबरी बिल्ली को मौका मिला, घी-दूध पर अब वह जुट गयी। रामू की बहू की जान आफत में और कबरी बिल्ली के छक्के-पंजे। रामू की बहू हाँडी में घी रखते-रखते ऊँघ गयी और बचा हुआ घी कबरी के पेट में। रामू की बहू दूध ढँककर मिसरानी को जिन्स देने गयी और दूध नदारद। अगर यह बात यहीं तक रह जाती, तो भी बुरा न था, कबरी रामू की बहू से कुछ परच गयी थी कि रामू की बहू के लिए खाना-पीना दुश्वार। रामू की बहू के कमरे में रबड़ी से भरी कटोरी पहुँची और रामू जब आये तब कटोरी साफ चटी हुई। बाजार से मलाई आयी और जब तक रामू की बहू ने खाना लगाया मलाई गायब।

रामू की बहू ने तै कर लिया कि या तो वही घर में रहेगी या फिर कबरी बिल्ली ही। मोरचाबन्दी हो गयी और दोनों सतर्क। बिल्ली फँसाने का कठघरा आया, उसमें दूध, मलाई, चूहे और भी बिल्ली को स्वादिष्ट लगनेवाले विविध प्रकार के व्यंजन रखे गये, लेकिन बिल्ली ने उधर निगाह तक न डाली। इधर कबरी ने सरगर्मी दिखलायी। अभी तक तो वह रामू की बहू से डरती थी; पर अब वह साथ लग गयी, लेकिन इतने फासिले पर कि रामू की बहू उस पर हाथ न लगा सके।

कबरी के हौसले बढ़ जाने से रामू की बहू को घर में रहना मुश्किल हो गया। उसे मिलती थी सास की मीठी झिड़कियाँ और पतिदेव को मिलता था रूखा-सूखा भोजन।

एक दिन रामू की बहू ने रामू के लिए खीर बनायी। पिस्ता, बादाम, मखाने और तरह-तरह के मेवे दूध में औटाए गये, सोने का वर्क चिपकाया गया और खीर से भरकर कटोरा कमरे के एक ऐसे ऊँचे ताक पर रखा गया, जहाँ बिल्ली न पहुँच सके। रामू की बहू इसके बाद पान लगाने में लग गयी।

उधर बिल्ली कमरे में आयी, ताक के नीचे खड़े होकर उसने ऊपर कटोरे की ओर देखा, सूँघा, माल अच्छा है, ताक की ऊँचाई अन्दाजी और रामू की बहू पान लगा रही है। पान लगाकर रामू की बहू सास जी को पान देने चली गयी और कबरी ने छलाँग मारी, पंजा कटोरे में लगा और कटोरा झनझनाहट की आवाज के साथ फर्श पर।

आवाज रामू की बहू के कान में पहुँची, सास के सामने पान फेंककर वह दौड़ी, क्या देखती है कि फूल का कटोरा टुकड़े-टुकड़े, खीर फर्श पर बिल्ली डटकर खीर उड़ा रही है। रामू की बहू को देखते ही कबरी चम्पत।

रामू की बहू पर खून सवार हो गया, न रहे बाँस न बजे बाँसुरी, रामू की बहू ने कबरी की हत्या पर कमर कस ली। रात भर उसे नींद न आयी, किस दाँव से कबरी पर वार किया जाय कि फिर जिन्दा न बचे, यही पड़े-पड़े सोचती रही। सुबह हुई और वह देखती है कि कबरी देहरी पर बैठी बड़े प्रेम से उसे देख रही है।

रामू की बहू ने कुछ सोचा, इसके बाद मुस्कराती हुई वह उठी, कबरी रामू की बहू के उठते ही खिसक गयी। रामू की बहू एक कटोरा दूध कमरे के दरवाजे की देहरी पर रखकर चली गयी। हाथ में पाटा लेकर वह लौटी तो देखती है कि कबरी दूध पर जुटी हुई है। मौका हाथ में आ गया, सारा बल लगाकर पाटा उसने बिल्ली पर पटक दिया। कबरी न हिली न डुली, न चीखी न चिल्लाई, बस एकदम उलट गयी।

आवाज जो हुई तो महरी झाड़ू छोड़कर, मिसरानी रसोई छोड़कर और सास पूजा छोड़कर घटनास्थल पर उपस्थित हो गयीं। रामू की बहू सिर झुकाये हुए अपराधिनी की भाँति बातें सुन रही है।

महरी बोली—"अरे राम! बिल्ली तो मर गयी, माँ जी, बिल्ली की हत्या बहू से हो गयी, यह तो बुरा हुआ।"

मिसरानी बोली—"माँ जी, बिल्ली की हत्या और आदमी की हत्या बराबर है, हम तो रसोई न बनावेंगी, जब तक बहू के सिर हत्या रहेगी।"

सास जी बोलीं—"हाँ ठीक तो कहती हो, अब जब तक बहू के सिर से हत्या न उतर जाय, तब तक न कोई पानी पी सकता है न खाना खा सकता है। बहू, यह क्या कर डाला?"

महरी ने कहा—"फिर क्या हो, कहो तो पण्डित जी को बुलाए लाएँ।"

सास की जान में जान आयी—"अरे हाँ, जल्दी दौड़ के पण्डित जी को बुला ला।"

बिल्ली की हत्या की खबर बिजली की तरह पड़ोस में फैल गयी—पड़ोस की औरतों का रामू के घर में ताँता बँध गया। चारों तरफ से प्रश्नों की बौछार और रामू की बहू सिर झुकाये बैठी।

पण्डित परमसुख को जब यह खबर मिली, उस समय वे पूजा कर रहे थे। खबर पाते ही वे उठ पड़े—पण्डिताइन से मुस्कराते हुए बोले—"भोजन न बनाना, लाला घासीराम की पतोहू ने बिल्ली मार डाली, प्रायश्चित होगा, पकवानों पर हाथ लगेगा।"

पण्डित परमसुख चौबे छोटे-से, मोटे-से आदमी थे। लम्बाई चार फीट दस इंच और तोंद का घेरा अट्ठावन इंच। चेहरा गोल-मटोल, मूँछ बड़ी-बड़ी, रंग गोरा, चोटी कमर तक पहुँचती हुई।

कहा जाता है कि मथुरा में जब पंसेरी खुराकवाले पण्डितों को ढूँढ़ा जाता था, तो पण्डित परमसुख जी को उस लिस्ट में प्रथम स्थान दिया जाता था।

पण्डित परमसुख पहुँचे और कोरम पूरा हुआ। पंचायत बैठी—सास जी, मिसरानी, किसनू की माँ, छन्नू की दादी और पण्डित परमसुख! बाकी स्त्रियाँ बहू से सहानुभूति प्रकट कर रही थीं।

किसनू की माँ ने कहा—"पण्डित जी, बिल्ली की हत्या करने से कौन नरक मिलता है?"

पण्डित परमसुख ने पत्रा देखते हुए कहा, "बिल्ली की हत्या अकेले से तो नरक का नाम नहीं बतलाया जा सकता, वह महूरत जब मालूम हो, जब बिल्ली की हत्या हुई, तब नरक का पता लग सकता है।"

"यही कोई सात बजे सुबह"—मिसरानी जी ने कहा।

पण्डित परमसुख ने पत्रे के पन्ने उलटे, अक्षरों पर उँगलियाँ चलाईं, मत्थे पर हाथ लगाया और कुछ सोचा। चेहरे पर धुँधलापन आया, माथे पर बल पड़े, नाक कुछ सिकुड़ी और स्वर गम्भीर हो गया—'हरे कृष्ण! हरे कृष्ण! बड़ा बुरा हुआ, प्रातःकाल ब्रह्म-मुहूर्त में बिल्ली की हत्या! घोर कुम्भीपाक नरक का विधान है! रामू की माँ, यह तो बड़ा बुरा हुआ।'

रामू की माँ की आँखों में आँसू आ गये—"तो फिर पण्डित जी, अब क्या होगा, आप ही बतलाएँ!"

पण्डित परमसुख मुस्कराए—"रामू की माँ, चिन्ता की कौन-सी बात है, हम पुरोहित फिर कौन दिन के लिए हैं? शास्त्रों में प्रायश्चित का विधान है, सो प्रायश्चित से सबकुछ ठीक हो जाएगा।"

रामू की माँ ने कहा—"पण्डित जी, उसी लिये तो आपको बुलवाया था, अब आगे बतलाओ कि क्या किया जाय!"

"किया क्या जाय, यही एक सोने की बिल्ली बनवाकर बहू से दान करवा दी जाय। जब तक बिल्ली न दे दी जाएगी, तब तक तो घर अपवित्र रहेगा। बिल्ली दान देने के बाद इक्कीस दिन का पाठ हो जाय।"

छन्नू की दादी—"हाँ और क्या, पण्डित जी ठीक तो कहते हैं, बिल्ली अभी दान दे दी जाय और पाठ फिर हो जाय।"

रामू की माँ ने कहा—"तो पण्डित जी, कितने तोले की बिल्ली बनवाई जाय?"

पण्डित परमसुख मुस्कराये, अपनी तोंद पर हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा—"बिल्ली कितने तोले की बनवायी जाय? अरे रामू की माँ, शास्त्रों में तो लिखा है कि बिल्ली के वजन-भर सोने की बिल्ली बनवायी जाय, लेकिन अब कलियुग आ गया है, धर्म-कर्म नाश हो गया है, श्रद्धा नहीं रही। सो रामू की माँ, बिल्ली के तौलभर की बिल्ली तो क्या बनेगी, क्योंकि बिल्ली बीस-इक्कीस सेर से कम की क्या होगी। हाँ, कम-से-कम इक्कीस तोले की बिल्ली बनवा के दान करवा दो, और आगे तो अपनी-अपनी श्रद्धा!"

रामू की माँ ने आँखें फाड़कर पण्डित परमसुख को देखा—"अरे बाप रे, इक्कीस तोला सोना! पण्डित जी यह तो बहुत है, तोलाभर की बिल्ली से काम न निकलेगा?"

पण्डित परमसुख हँस पड़े—"रामू की माँ! एक तोला सोने की बिल्ली! अरे रुपया का लोभ बहू से बढ़ गया? बहू के सिर बड़ा पाप है, इसमें इतना लोभ ठीक नहीं!"

मोल-तोल शुरू हुआ और मामला ग्यारह तोले की बिल्ली पर ठीक हो गया। इसके बाद पूजा-पाठ की बात आयी। पण्डित परमसुख ने कहा—"उसमें क्या मुश्किल है, हम लोग किस दिन के लिए हैं, रामू की माँ, मैं पाठ कर दिया करूँगा, पूजा की सामग्री आप हमारे घर भिजवा देना।"

"पूजा का सामान कितना लगेगा?"

'अरे, कम-से-कम सामान में हम पूजा कर देंगे, दान के लिए करीब दस मन गेहूँ, एक मन चावल, एक मन दाल, मनभर तिल, पाँच मन जौ और पाँच मन चना, चार पसेरी घी और मन भर नमक भी लगेगा। बस, इतने से काम चल जाएगा।"

"अरे बाप रे, इतना सामान! पण्डित जी इसमें तो सौ-डेढ़ सौ रुपया खर्च हो जाएगा"—रामू की माँ ने रुआँसी होकर कहा।

"फिर इससे कम में तो काम न चलेगा। बिल्ली की हत्या कितना बड़ा पाप है, रामू की माँ! खर्च को देखते वक्त पहले बहू के पाप को तो देख लो! यह तो प्रायश्चित में उसे वैसा खर्च भी करना पड़ता है। आप लोग कोई ऐसे-वैसे थोड़े हैं, अरे सौ-डेढ़ सौ रुपया आप लोगों के हाथ का मैल है।"

पण्डित परमसुख की बात से पंच प्रभावित हुए, किसनू की माँ ने कहा—"पण्डित जी ठीक तो कहते हैं, बिल्ली की हत्या कोई ऐसा-वैसा पाप तो है नहीं। बड़े पाप के लिए बड़ा खर्च भी चाहिए।"

छन्नू की दादी ने कहा—"और नहीं तो क्या, दान-पुन्न से ही पाप कटते हैं—दान-पुन्न में किफायत ठीक नहीं।"

मिसरानी ने कहा—"और फिर माँ जी आप लोग बड़े आदमी ठहरे। इतना खर्च कौन आप लोगों को अखरेगा।"

रामू की माँ ने अपने चारों ओर देखा—सभी पंच पण्डित जी के साथ। पण्डित परमसुख मुस्करा रहे थे। उन्होंने कहा—"रामू की माँ! एक तरफ तो बहू के लिए कुम्भीपाक नरक है और दूसरी तरफ तुम्हारे जिम्मे थोड़ा-सा खर्चा है। सो उससे मुँह न मोड़ो।"

एक ठण्डी साँस लेते हुए रामू की माँ ने कहा—"अब तो जो नाच नचाओगे नाचना ही पड़ेगा।"

पण्डित परमसुख जरा कुछ बिगड़कर बोले—"रामू की माँ! यह तो खुशी की बात है—अगर तुम्हें यह अखरता है तो न करो, मैं चला"—इतना कहकर पण्डित जी ने पोथी-पत्रा बटोरा।

"अरे पण्डित जी—रामू की माँ को कुछ नहीं अखरता—बेचारी को कितना दुःख है—बिगड़ो न!" मिसरानी, छन्नू की दादी और किसनू की माँ ने एक स्वर में कहा।

रामू की माँ ने पण्डित जी के पैर पकड़े—और पण्डित जी ने अब जमकर आसन जमाया।

"और क्या हो?"

"इक्कीस दिन के पाठ के इक्कीस रुपए और इक्कीस दिन तक दोनों बखत पाँच-पाँच ब्राह्मणों को भोजन करवाना पड़ेगा।" कुछ रुककर पण्डित परमसुख ने कहा—"सो इसकी चिंता न करो, मैं अकेले दोनों समय भोजन कर लूँगा और मेरे अकेले भोजन करने से पाँच ब्राह्मण के भोजन का फल मिल जाएगा।"

"यह तो पण्डित जी ठीक कहते हैं, पण्डित जी की तोंद तो देखो!" मिसरानी ने मुसकराते हुए पण्डित जी पर व्यंग्य किया।

"अच्छा तो फिर प्रायश्चित का प्रबन्ध करवाओ रामू की माँ, ग्यारह तोला सोना निकालो, मैं उसकी बिल्ली बनवा लाऊँ—दो घण्टे में मैं बनवाकर लौटूँगा, तब तक सब पूजा का प्रबन्ध कर रखो—और देखो पूजा के लिए..."

पण्डित जी की बात खतम भी न हुई थी कि महरी हाँफती हुई कमरे में घुस आयी और सब लोग चौंक उठे। रामू की माँ ने घबराकर कहा—"अरी क्या हुआ री?"

महरी ने लड़खड़ाते स्वर में कहा—"माँ जी, बिल्ली तो उठकर भाग गई।"

अभ्यास प्रश्न

1. 'प्रायश्चित' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'प्रायश्चित' कहानी के प्रमुख तत्त्वों के आधार पर विशेषताएँ लिखिए।
3. 'प्रायश्चित' कहानी में लेखक ने समाज की किस घातक मनोवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है?
4. वातावरण एवं भाषा-शैली की दृष्टि से 'प्रायश्चित' कहानी की समीक्षा कीजिए।
5. सप्रमाण सिद्ध कीजिए कि 'प्रायश्चित' एक सफल कहानी है।
6. वर्माजी को मानव-समाज की गहरी परख है। इस कथन की व्याख्या 'प्रायश्चित' के पात्रों के आधार पर कीजिए।
7. ''जिज्ञासा की उत्तरोत्तर वृद्धि अच्छी कहानी की पहचान है।'' इस कथन के आधार पर 'प्रायश्चित' कहानी का मूल्यांकन कीजिए।
8. 'प्रायश्चित' कहानी के आधार पर पण्डित परमसुख का चरित्र-चित्रण कीजिए।
9. 'प्रायश्चित' कहानी में सामाजिक रूढ़ियों और धर्मान्धताओं पर प्रहार और व्यंग्य का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
10. 'प्रायश्चित' कहानी जिज्ञासा-भाव से परिपूर्ण है—इस कथन का औचित्य सिद्ध कीजिए।
11. श्रेष्ठ कहानी की विशेषताएँ बताते हुए 'प्रायश्चित' कहानी का मूल्यांकन कीजिए।
12. सिद्ध कीजिए कि 'प्रायश्चित' कहानी की सफलता उसमें निहित घटनाओं पर आधारित है।
13. कहानी-कला की दृष्टि से 'प्रायश्चित' कहानी की समीक्षा कीजिए।
14. 'प्रायश्चित' कहानी की कहानी तत्त्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए।
15. 'प्रायश्चित' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
16. भगवतीचरण वर्मा की संकलित कहानी की कथावस्तु की समीक्षा कीजिए।
17. 'प्रायश्चित' कहानी का कथानक अपनी भाषा में लिखिए।
18. 'प्रायश्चित' कहानी के आधार पर पण्डित परमसुख का चित्रांकन कीजिए।
19. 'प्रायश्चित' कहानी के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।